भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **नवम्बर** 2001 | **अंक** 11

सूर्य

रश्मिओं के पुंज
अद्‌भुत नेत्र
पावक, मित्र, जल सब के-
सूर्य का लो उदय
नभ में हो गया है
भूमि, नभ, अंतरिक्ष
सब, सर्वत्र ही
व्याप्त हैं उससे
सूर्य ही आत्मा
अचर चर रूप
इस जग का

अग्नि

सभी के कल्याणकर
ऋत्विज, हवनकर्त्ता
यज्ञ-स्वामी
रत्नदाता
अग्नि की जय हो

❑ ❑ ❑

अग्नि से ही प्राप्त होती
सम्पदा, पोषण
सुयश, वरवीरता
दिन-दिन

वाक्

मैं विचरती रुद्र, वसु के साथ
रवि, जग-देवता सब के सहित
धारती मित्रावरुण को
देव-भेषज युगल
पावक, इन्द्र सब को ही

❑ ❑ ❑

जगदीश्वरी हूँ मैं
धन की प्रदात्री
यज्ञकर्ताओं में प्रथम वेदज्ञ
जगत में देवताओं ने जिसे पूजा
अनेकों वर्ण, रूपों में
जीव, संसृति, चेतना का सार
स्वयं संचार
मैं ही हूँ

(वेद की कविता से)

सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए शिक्षा

पिछले दिनों ज्योतिष को विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रतिक्रिया व्यक्ति की, ज्योतिष, आई०ए०एस०, पी०सी०एस० के पाठ्यक्रम में नहीं है अत: इसे पढ़ना-पढ़ाना निरर्थक है। आज एकमात्र उद्देश्य प्रतियोगिता परीक्षा में उत्तीर्ण होना है। क्या यह अध्ययन मनुष्य को एकांगी नहीं बनाता। मानवीय विकास के लिए क्या इतने सीमित ज्ञान की अपेक्षा है? यही कारण है कि आज के छात्र-छात्रा अपने अध्ययन विषय में भले ही योग्यता प्राप्त कर लें, किन्तु व्यावहारिक क्षेत्र में उनका ज्ञान अधूरा रहता है। जिस दिशा से ज्ञान की किरणें प्रवाहित हों उन सबको ग्रहण करने से ही पूर्णता प्राप्त होगी। कुछ विषयों मात्र का अध्ययन करने से पूर्ण विकास नहीं होता। आज विशिष्टीकरण का युग है, एक दिशा में केन्द्रित होने से परिस्थिति विशेष में असफल होना पड़ता है।

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षामंत्री श्री ओमप्रकाश सिंह ने इस दिशा में सक्रियता दिखाई है। उनका विचार है—मौजूदा पाठ्यक्रम छात्रों को पूर्ण शिक्षा नहीं दे पा रहा है। उसमें बदलाव अपरिहार्य हो गया है। उनका प्रस्ताव है कि स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान और वाणिज्य में तीन के स्थान पर दो ही विषय पढ़ाये जायँ। तीसरे विषय के रूप में एक नया पाठ्यक्रम तैयार करने की योजना है जिसमें सभी वर्गों (कला, वाणिज्य और विज्ञान) के पाठ्यक्रमों के साथ-साथ सामान्य ज्ञान का समावेश होगा। इसके अन्तर्गत राष्ट्र गौरव और आर्थिक स्वावलम्बन विषय शामिल किये जायँगे।

उच्च शिक्षामंत्री महोदय का कथन है—वर्तमान पाठ्यक्रम छात्र को अपने वर्ग के पाठ्यक्रम के बारे में तो जानकारी देता है, लेकिन दूसरे वर्ग से जुड़ी कोई सामान्य सी बात पूछ ली जाए और जिसका ज्ञान रोजमर्रा के जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है तो छात्र अपने हाथ खड़े कर देता है।

राष्ट्रगौरव भाजपा की शब्दावली है जिससे इसका विरोध हो सकता है। वास्तव में आज आधारभूत ज्ञान की अपेक्षा है—अपने नगर, प्रदेश, देश का भूगोल, इतिहास, साहित्य, संस्कृति, संविधान, ज्ञान-विज्ञान, दिन-प्रतिदिन की प्रमुख घटनाएँ देश और समाज पर पड़ने वाले उनके प्रभाव का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। मानवीय गुणों के विकास के लिए समय सापेक्ष, संवेदनाजन्य, उन्मुक्त तथा सशक्त मस्तिष्क से पूर्ण होना आवश्यक है। आज एलेक्ट्रॉनिक युग ने सारी दुनिया को छोटी कर दिया है, दूरियाँ समाप्त हो गई हैं प्रतिक्षण ज्ञान त्वरित गति से आ रही है। यदि उनको ग्रहण करने की क्षमता हमारे मस्तिष्क में नहीं होगी तो हम अपूर्ण रह जायेंगे।

आज सारा ज्ञान पाठ्यक्रम की पुस्तकों तक सीमित है। पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रवृत्ति नहीं है जिससे छात्रों में रचनात्मक सोच का विकास नहीं होता। एक निर्धारित क्षेत्र में अपने को सीमित रखने से जड़ता का सृजन होता है। प्रत्येक विषय और ज्ञान एक-दूसरे विषय और ज्ञान से किसी न किसी स्तर पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जो दूसरे तीसरे विषय की ओर इंगित और प्रेरित करते हैं। अध्ययन के क्षेत्र का विस्तार कर साहित्येतर पुस्तकों के अतिरिक्त संवेदनाजन्य साहित्य पुस्तकें यथा उपन्यास, कहानी, कविता पढ़ने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

रचनात्मकता से व्यक्तित्व का विकास होता है, आत्मविश्वास जागृत होता है और व्यक्ति को वह प्रत्येक क्षेत्र में सुदृढ़ता प्रदान करता है।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

विद्याधर सूरज प्रसाद नायपाल को साहित्य का नोबल पुरस्कार

17 अगस्त 1932 को जन्मे भारतीय मूल के 69 वर्षीय सर उपाधि से विभूषित **वी०एस० नायपाल** को 215 वर्ष पुरानी प्रख्यात स्वीडिश अकादमी द्वारा दिसम्बर में दस लाख डालर का पुरस्कार दिया जायगा। इस पुरस्कार के लिए उनके 1932 में प्रकाशित आत्मकथा पर आधारित उपन्यास 'द एनिग्मा ऑफ एराइवल' को चुना है। अकादमी की घोषणा के अनुसार नायपाल को उत्तर-औपनिवेशिक समाज की ईमानदारी से की गई समीक्षा और इस्लामी कट्टरवाद के आलोचनात्मक आकलन के लिए सर्वोत्कृष्ट साहित्य सर्जक के रूप में चुना गया है। उन्होंने वर्तमान विधाओं को अपनी नई शैली दी है और गल्प तथा यथार्थ के सम्मिश्रण द्वारा विस्तृत की हुई पराजित जातियों के इतिहास का सजीव वर्णन किया है।

यह उल्लेखनीय है कि श्री नायपाल ने कुछ दिनों पूर्व एक पाकिस्तानी पत्रकार नादिरा अलवी से शादी की है। इस पर कुछ मुस्लिम लेखकों का यहाँ तक कहना है कि नायपाल ने मुस्लिम समाज से बदला लेने के लिए ही मुस्लिम महिला से ब्याह रचाया है।

श्री नायपाल के पूर्वज उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के निवासी थे। 'एन एरिया ऑफ डार्कनेस' में उन्होंने अपने गाँव की चर्चा की है। सम्भवत: 1962 में वे अपने पूर्वजों के गाँव गये थे। 'दि विलेज ऑफ दुबेज' अध्याय में अपने गाँव का विस्तार से वर्णन किया है। उनके दादा ब्राह्मण थे और पंडिताई जानते थे। त्रिनिदाद वे पैसा कमाने गये थे।

पिछले दिनों एक साहित्य समारोह में अपनी पाकिस्तानी पत्नी के साथ शामिल हुए। उनकी पत्नी जो पाकिस्तान की एक सम्मानित लेखिका हैं, ने कहा—वास्तव में तालिबान बदमाश हैं। नायपाल ने कहा—अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिबान दुष्ट हैं, इस सरकार को निश्चित ही हरा देना चाहिए। तालिबान जितने डरावने दिखते हैं, उतने हैं भी।

विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल

जन्म : 17 अगस्त, 1932 को त्रिनिदाद में

शिक्षा : क्वींस रॉयल कॉलेज, पोर्ट ऑफ स्पेन और यूनिवर्सिटी कॉलेज, ऑक्सफोर्ड

विवाह : पेट्रिशिया हाले (1955-96) के साथ। पेट्रिशिया के निधन के बाद 1996 में नादिरा खानम अल्वी से

कुछ प्रमुख पुस्तकें : 1957 में द मिस्टिक मास्यूरी, 1959 में मिग्यूल स्ट्रीट, 1961 में अ हाउस फॉर मि० बिस्वास, 1967 में द मिमिक मैन, 1971 में इन अ फ्री स्टेट, 1987 में द इनिग्मा ऑफ अराइवल, 1994 में ए वे इन द वर्ल्ड और 2001 में हाफ अ लाइफ (सभी फिक्शन)। 1964 में ऐन एरिया ऑफ डार्कनेस, 1977 में इंडिया : अ वूंडेड सिविलाइजेशन, 1979 में ए बेंड इन द रिवर, 1981 में अमांग द बिलिवर्स, 1984 में फाइंडिंग द सेंटर, 1990 में इंडिया : ए मिलियन म्यूटिनीज नाउ और 1998 में बियॉन्ड बिलीफ (सभी नॉन फिक्शन)।

कुछ प्रमुख पुस्तकें : 1958 में जॉन लैवेलिन रेज स्मृति पुरस्कार, 1961 में समरसैट मॉम अवार्ड, 1968 में डब्लू० एच० स्मिथ अवार्ड, 1971 में बुकर पुरस्कार, 1986 में क्रिएटिव राइटिंग के लिए टी०एस० इलियट अवार्ड, 1990 में ब्रिटेन का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'नाइट' और 1993 में डेविड कोहेन ब्रिटिश लिटरेचर प्राइज।

नायपाल को नोबल पुरस्कार प्राप्ति पर प्रतिक्रिया

नायपाल को उत्कृष्ट लेखन के लिए नहीं, बल्कि इस्लाम विरोधी लेखन के लिए नोबल पुरस्कार दिया गया है। **—नामवर सिंह**

जहाँ तब मैं नायपाल को जानता हूँ उनके लेखन में एक खास किस्म का बेलागपन है। स्थितियों का जिस तरह गहराई से जाकर विश्लेषण करते हैं वे काबिले तारीफ है। हाँ वे निर्मम आलोचक अवश्य हैं। **—प्रो० नित्यानंद तिवारी**

नायपाल गाँधीजी और भारतीय संस्कृति की जीवंतता, उसके मूल्यों और महत्त्व को पहचानते हैं। भारत को अपनी भारतीयता छोड़कर यूरोपीय रंग-ढंग में रच-बसकर विकास करना चाहिए, इसका उन्होंने कभी समर्थन नहीं किया। **—निर्मल वर्मा**

श्री नायपाल का लेखन भारतीय मूल्यों की गहरी समझ प्रतिबंधित करता है। उनकी साहित्यिक संवेदना सभी सीमाओं से परे है और उसने मानव के सभी सरोकारों का पोषण किया है। श्री नायपाल ने विकासशील दुनिया पर उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद के असर का चित्रण किया है। **—अटलबिहारी वाजपेयी**

पुरस्कार-सम्मान

बुकर पुरस्कार

कुख्यात गैंगस्टर नेद केली की कथा लिखकर आस्ट्रेलियाई उपन्यासकार **पीटर कैरी** ने दूसरी बार प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार जीत लिया है।

श्री कैरी ने इससे पहले वर्ष 1988 में 'आस्कर एण्ड ल्यूसिडा' के लिए यह पुरस्कार प्राप्त किया था।

33 वर्ष के इतिहास में बुकर पुरस्कार दोबारा जीतने वाले श्री कैरी दूसरे लेखक हैं। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के लेखक जे०एम० कोत्जी को दो बार यह सम्मान मिल चुका है। इस पुरस्कार के तहत विजेता को 21000 पाउण्ड की राशि प्रदान की जाती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि को 'कथाक्रम' सम्मान

वर्ष 2001 का आनन्द स्मृति कथाक्रम सम्मान समकालीन कथा साहित्य के समर्थ एवं सार्थक हस्ताक्षर **ओमप्रकाश वाल्मीकि** को 10 एवं 11 नवम्बर को आयोजित कथाक्रम 2001 के अवसर पर लखनऊ में प्रदान किया जायेगा। इस सम्मान के अन्तर्गत उन्हें 15 हजार रुपये नकद, प्रतीक चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र मिलेगा।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार

1. महादेवी वर्मा, 2. जैनेन्द्रकुमार, 3. अज्ञेय, 4. रामकुमार वर्मा, 5. अमृतलाल नागर, 6. नागार्जुन, 7. रामविलास शर्मा, 8. श्रीनारायण चतुर्वेदी, 9. धर्मवीर भारती, 10. नरेश मेहता, 11. कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह, 12. डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन', 13. डॉ० रघुवंश, 14. अमृतराय, 15. डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, 16. डॉ० विद्यानिवास मिश्र, 17. डॉ० जगदीश गुप्त, 18. डॉ० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'नि:शंक' और 19. श्री जानकीवल्लभशास्त्री।

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी सम्मानित

लायन्स क्लब उन्नाव द्वारा आयोजित एक विशिष्ट समारोह में भारतीय विद्या भवन (मुम्बई) की मासिक पत्रिका नवनीत के सम्पादक **डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी** को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ० विष्णुकांत शास्त्री ने सरस्वती की प्रतिमा, शाल, प्रशस्ति-पत्र देकर उनकी साहित्य-सेवा के लिए सम्मानित किया।

राज्यपाल ने कहा कि त्रिवेदीजी ने अपनी पत्रिका के साहित्यिक स्वरूप को आज की पीत-पत्रकारिता के युग में कायम रखा है। हिन्दी भाषा के प्रति उनका योगदान सराहनीय है।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सम्मान पुरस्कार

कवि **वीरेंद्र मिश्र** निधनोपरांत को हिन्दी अकादमी दिल्ली का वर्ष 2000-2001 का विशिष्ट कृति सम्मान उनके गद्य एवं पद्य संकलन अंतराल के लिए प्रदान किया जाएगा। सम्मान स्वरूप 21,000 रुपये, शाल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जायँगे।

अन्य साहित्यिक कृतियों में श्री रमानाथ अवस्थी की 'याद आते हैं' (संस्मरण), डॉ० रामेश वेदी का 'चरक संहिता के जीव जंतु' (विविध), डॉ० पूरनचंद्र जोशी का 'स्वप्न और यथार्थ' निबन्ध संग्रह, श्री दयानन्द वर्मा का 'कलयुगी उपनिषद' (उपन्यास), डॉ० रामकिशोर द्विवेदी का 'रोग मुक्ति का राग' (लेख संग्रह), डॉ० श्रीमती पुष्पा राही का 'शब्द की लहरें' (गीत संग्रह), डॉ० हरिकृष्ण देवसरे का बाल साहित्य 'मेरा चिंतन' (आलोचना), श्री वीरेंद्रकुमार गौड़ का 'आतंक की चुनौती' (विविध), श्रीमती निर्मला गर्ग का 'कबाड़ी का तराजू' (काव्यसंग्रह), डॉ० प्रेमसिंह का 'क्रान्ति का विचार और हिन्दी उपन्यास आलोचना' तथा श्री विनोदकुमार मिश्र का 'विकलांग विभूतियों की जीवन गाथाएँ' (विविध) शामिल हैं। बाल एवं किशोर साहित्य के अंतर्गत श्री सुशीलकुमार की श्रेष्ठ सांस्कृतिक कहानियाँ तथा डॉ० रामजन्म शर्मा को वर्ष 2000 में प्रकाशित समस्त कहानियों के लिए सम्मानित किया जाएगा। साहित्यिक कृति सम्मान तथा बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान योजना के अन्तर्गत सभी 11,000 रुपये शाल तथा प्रशस्ति पत्र 10 नवम्बर को प्रदान किये जायेंगे।

रामकृपाल गुप्त 'राम' सम्मानित

युवा साहित्यकार एवं सरस्वती साहित्य वाटिका (गोरखपुर) के अध्यक्ष **रामकृपाल गुप्त 'राम'** को उनकी हिन्दी-भोजपुरी में साहित्य सेवाओं के लिए अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, उ०प्र० (लखनऊ) द्वारा भोजपुरी शिरोमणि सम्मान से एवं अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति मथुरा द्वारा 'कविवर मैथिलीशण गुप्त सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

लेखकों से शान्ति के लिए अपील

अफगानिस्तान में तालिबान के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई को देखते हुए दक्षिण एशियाई देशों के लेखकों से इस क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने के लिए आगे आने की अपील की गयी है। दक्षिण एशिया के लेखकों के संगठन फाउंडेशन ऑफ सार्क राइटर्स एण्ड लिटरेचर ने लेखकों को पत्र और ई-मेल के जरिए संदेश भेजकर यह अपील की है। फाउंडेशन की संचालन समिति की अध्यक्ष एवं पंजाबी की मशहूर लेखिका अजीत कौर ने बताया कि आज विश्व में जो कुछ हो रहा है। वह हम सबके लिए गहरी चिन्ता की बात है। ऐसे में लेखक ही पूरी दुनिया में शान्ति की अपील कर सकते हैं क्योंकि लेखकों ने हमेशा ही युद्ध का विरोध किया है।

समकालीन हिन्दी कविता का पहला सीडी रोम

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ने समकालीन हिन्दी कविता का पहला सीडी रोम तैयार किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक वाजपेयी ने यहाँ बतया कि हिन्दी में करीब 36 कवियों की लगभग 200 कविताओं की छह सीडी रोम तैयार किया गया है जिससे देश-विदेश के हिन्दी छात्र समकालीन हिन्दी कविता से परिचित हो सकेंगे। उन्होंने बताया कि यह सीडी रोम जल्द ही बाजार में उपलब्ध हो जाएगा। इसमें ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता नरेश मेहता सेलेकर युवा कवयित्री गगन गिल तक की कविताएँ शामिल हैं।

विश्वविद्यालय ने हिन्दी के दस मशहूर लेखकों की चित्रावली भी तैयार की है। इसके अंतर्गत ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कथाकार निर्मल वर्मा की चित्रावली जारी हो चुकी है। डॉ० नामवर सिंह, त्रिलोचन, नेमिचंद जैन, कुँवर नारायण और कृष्णा सोबती की चित्रावलियाँ भी जारी हो रही हैं।

विश्वविद्यालय देश में रहने वाले तथा विदेश में रहने वाले हिन्दी शोधार्थियों, अनुवादकों आदि की डायरेक्टरी भी तैयार कर रहा है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस तथा राष्ट्रीय इतिहास कांग्रेस की तरह राष्ट्रीय हिन्दी कांग्रेस का भी आयोजन करने वाला है। इसके अलावा देश में व्याख्याताओं के लिए वर्धा में 21 दिन की कार्यशाला भी होने वाली है।

सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत

डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय

250.00

किसी साहित्य के सौन्दर्यबोध के आरेखन का तात्पर्य होता है, उस साहित्य के सामाजिक दायित्व एवं सांस्कृतिक बोध की पड़ताल। ऐसे समय में, जब 'अर्थ के लय' की गलतफ़हमी उत्पन्न कर कविता को नारेबाजी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था तथा गद्यात्मक सपाटबयानी को अभिव्यक्ति की सहजता से जोड़कर देखा जा रहा था, नवगीत ग्राम्य-चेतना की मिठास के साथ नगरीय जीवन के विसंगत यथार्थों एवं मखौल बन रही आदमीयत को स्वर देने की कोशिश कर रहा था। इस तरह लय की सुरक्षा के साथ आधुनिक जीवन की विषमताओं को आत्मसात् करता हुआ नवगीत कविता के नव-सौन्दर्य का साक्षी बना। 'सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत' के माध्यम से नवगीत को साहित्य से खारिज कर देने की साजिश को नकारते हुए नवगीत के विविध पक्षों को विस्तार से उभारने की कोशिश की गयी है जिससे हिन्दी कविता का व्यापक फलक स्पष्ट हो सके।

हिन्दी दिवस

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को सरकारी अर्ध सरकारी संस्थानों में हिन्दी दिवस मनाने की औपचारिकता पूरी की जाती है। यह औपचारिकता महोत्सव का रूप लेती है जिसमें उस क्षेत्र के हिन्दी के विद्वानों, साहित्यकारों को आमंत्रित कर समारोह सम्पन्न किया जाता है। किन्तु व्यावहारिक स्तर पर राजकाज में हिन्दी का प्रयोग निचले स्तर पर होकर रह जाता है। जैसे समाज में उच्चवर्ग और निम्न वर्ग है, वही स्थिति अंग्रेजी और हिन्दी की है। फिर भी संघर्ष के बावजूद हिन्दी ने अपना स्थान बना लिया है, यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, देहरादून के **भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी दिवस** आयोजित हुआ। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के डॉ० भगवानदेव पाण्डेय ने राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। इस परिचर्चा में डॉ० महेश 'दिवाकर', डॉ० एस०के० गोयल, श्री सुधीन सिंघल, डॉ० दिनेश चमोला प्रभृति हिन्दी प्रेमियों ने भाग लिया। संस्थान अपनी पत्रिका 'विकल्प' के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

स्वतंत्रता के 54 वर्ष बाद भी हमारे देश के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सका। जनतंत्र के नाम पर मतदाता के असंतुष्ट हो जाने के भय से हमने कभी कोई कठोर निर्णय नहीं लिया। सदा भविष्य के लिए समस्या को टालते रहे जिस कारण देश का सामाजिक, सांस्कृतिक विकास तो नहीं हुआ, राजनीतिक आतंकवाद का विकास अवश्य हुआ। यह देश के लिए शुभ लक्षण नहीं है।

प्रसार भारती बोर्ड के सदस्य

प्रोफेसर विद्यानिवास मिश्र को प्रसार भारती बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया गया है। प्रोफेसर मिश्र को इस कारपोरेशन बोर्ड का अंशकालिक सदस्य नियुक्त किया गया हे। उनके अतिरिक्त श्री एम०ए० जकी एवं श्री एस० कासीपांडियन को भी सदस्य तथा प्रोफेसर यू०आर० राव को प्रसार भारती का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

आतंक, भय, करुणा और धर्मग्रन्थ

जब मनुष्य पर विपत्ति आती है तो वह अपने धर्म ग्रन्थों को याद करता है, अपने भगवान, खुदा, अल्लाह, गॉड की शरण में जाता है। शरण में जाने का माध्यम है धर्मग्रन्थ। अमेरिका में आतंकवादी हमले के बाद बाइबिल की बिक्री बहुत बढ़ गई है। 50 से 60 फीसदी तक बढ़ी है। दूसरी ओर पाकिस्तान और तालिबान में भी कुरान की आवृत्ति जोर-शोर से की जा रही है। देखना है किसका अल्लाह और गॉड में कौन भारी पड़ता है।

वेद की कविता

प्रभुदयाल मिश्र

120.00

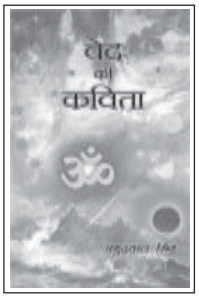

इस कृति में ऋग्, यजुष् और अथर्व वेदों के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्तों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। सूक्तों का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक किया गया है। अनुवाद छन्दोबद्ध है, निश्छन्द और मिश्र शैली में भी। साथ ही यह इतनी सरल भाषा में है कि कोई भी इसे सरलता से समझ सकता है।

वेद के सूक्त 'सरमा-पाणि-संवाद' बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह उस प्राचीनतम काल की याद दिलाता है जब वैदिक जन इरावती (रावी) और शतद्रु (सतलज) के आसपास रहते थे। पास में उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त की पहाड़ियाँ थीं। यह पणियों (वनजारों) का प्रदेश था। पणि लोग गोधन, भेड़-बकरियाँ बेचने खरीदने आते और रात में चुपचाप गायें चुराकर भाग जाते। वे गायों को दूर गुफाओं में छुपा देते। सरमा जासूसी करने वाले कुत्ता कुतियों में एक है। आज भी चोरों का पता लगाने के लिए सारमेयों (कुत्तों) का उपयोग किया जाता है। संवाद कवि कल्पना है। इसकी भूमि ब्रह्मावर्त क्षेत्र है जहाँ राजा दाशराज्ञ का (ऋग्वेद में वर्णित) विकटतम युद्ध हुआ था। उर्वशी अप्सरा है—अप्सराओं में सर्वाधिक सुन्दरी। अप्सराओं और गन्धर्वों की एक पृथक् पर्वतीय जाति-ट्राइब थी जो सुन्दर होने के साथ नृत्य गान के लिए प्रसिद्ध थी। उषा, वाक्, पुरुष सूक्त अत्यन्त लोकप्रिय हैं। सूर्या विवाह तो हमारी विवाह संस्था का मूल ही है। यही स्थिति संज्ञान सूक्त की है। ये दोनों थोड़े से अन्तर के साथ ऋग् और अथर्व दोनों में मिलते हैं। अथर्व के पृथिवी सूक्त जैसी रचना तो सारे विश्व में कहीं नहीं है। मातृभूमि के प्रति श्रद्धा भक्ति की यह अप्रतिम रचना है। सूक्तों के चयन की दृष्टि से यह बड़ी महत्त्वपूर्ण कृति है।

श्री मिश्र ने पर्याप्त श्रम के द्वारा सूक्तों का कथ्य पाठकों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है। इस कृति से श्रद्धालु पाठकों को अपनी बहुमूल्य विरासत के एक अंश को एक नजर देखने और समझने में सहायता मिलेगी।

> कोई भी समाज, देश या संस्कृति किताबों के बगैर अधूरी है। उसका इतिहास कच्चा है। किताबों के रूप बदल सकते हैं मगर सरोकार नहीं। क्योंकि किताबों के साथ एक खास बात यह भी है कि इनसे हमारा एक रागात्मक संबंध होता है।

पारसी रंगमंच पर प्रकाशित पुस्तकें

पारसी रंगमंच किसी समय कितना सशक्त रंगमंच था इस पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं—

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्या नगर के हिन्दी विभागाध्यक्ष **प्रो० सनतकुमार** की पुस्तक **पारसी रंगमंच** (66.00) पारसी रंगमंच के उद्भव और विकास पर महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती है। पारसी रंगमंच की विशेषताएँ, पारसी नाटक में डलियाँ, पारसी नाटककार और पारसी रंगमंचकर्मियों से साक्षात्कार उस अतीत की रोचक कहानी है। पारसी रंगमंच पर अभिनीत नाटकों के प्रमुख अंश उद्धृत करने से उस युग की झलक देखने को मिलती है।

डॉ० नवनीत चौहान द्वारा सम्पादित दूसरी पुस्तक **पारसी रंगमंच और ख्याल परम्परा** (46.00) में देश के विभिन्न क्षेत्रों में पारसी रंगमंच की गायन तथा नाट्य शैली की विविधता पर अनेक विद्वानों के लेख संगृहीत हैं।

समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच (66.00) **प्रो० सनतकुमार** की दूसरी पुस्तक है। इसमें हिन्दी क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। एलेक्ट्रॉनिक युग में लुप्त होती नाट्य परम्परा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए नाटक तथा रंगमंच की वर्तमान स्थिति पर विचार किया गया है।

तीनों ही पुस्तकें नाट्य साहित्य के इतिहास पर शोधपरक सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

प्रकाशक : कुल सचिव,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

नियति साहित्यकार की

डॉ० सुधाकर उपाध्याय

80.00

आज द्रुतगामी सामाजिक परिवेश में साहित्यकार एक अजब-सी बेचैनी महसूस कर रहा है। भौतिकता प्रधान युग में तेजी से मूल्य बदलते जा रहे हैं, कहीं स्थिरता नहीं है। संस्कृति और संस्कार को त्याग कर सभ्यता नये रूप ग्रहण करती आ रही है। आध्यात्मिक चेतना विलुप्त हो गयी है। तृषित मनुष्य मृगतृष्णा के पीछे भाग रहा है। ऐसे में आहत साहित्यकार विद्रोही स्वर में उन शाश्वत तत्त्वों की ओर इंगित करता है जिनसे मानवता का विकास और संवेदना का सृजन हुआ।

लेखक ने अपने 12 ललित एवं विचारपूर्ण निबन्धों में साहित्यकार की इसी व्यथा को व्यक्त किया है। ये निबन्ध पाठकों को सोचने के लिए विवश करेंगे।

तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० रामअवतार पाण्डेय

तीन सौ बीस रुपये

गोस्वामी तुलसीदास मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन के दार्शनिक, आध्यात्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के प्रधान वाहक हैं।

इस ग्रन्थ में विस्तार से भक्ति आंदोलन और भक्ति भावना के उदय और विकास का लेखा-जोखा उपस्थित करते हुए गोस्वामी तुलसीदास के अवदान का में सम्यक् आकलन किया गया है। तुलसीदास के काव्य में सर्वत्र भक्ति भावना अन्त:सलिला की भाँति प्रवाहित मिलती है। वे सगुण भक्तिधारा में मर्यादावादी दास्यभक्ति के प्रधान पोषक हैं।

विनयपत्रिका में उनकी निश्छल भक्ति भावना जिस गलदश्रु भावुकता के साथ-साथ संसार की असारता, मन की चंचलता, अपनी क्षुद्रता और उपास्य की महत्ता के रूप में अभिव्यक्त हुई है, वह न केवल काव्य की दृष्टि से बल्कि भक्ति की भावना के महनीय ग्रन्थ के रूप में भक्तों के गले का कण्ठहार बनी हुई है। अपने उपास्य राम के प्रति गोस्वामी तुलसीदास बड़े आर्तस्वर में निवेदन करते हैं कि संसार में रहते हुए वे बहुत दु:खी हैं। वह उनसे अपना उद्धार करने की प्रार्थना करते हुए गा उठते हैं : 'कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।'

विनयपत्रिका के पद मुक्तक होते हुए भी एक निश्चित क्रम से आबद्ध हैं। इस दृष्टि से विनयपत्रिका के पदों की तुलना हम उन अलग-अलग भास्वर मणियों या मोतियों से कर सकते हैं, जिन्हें एक सूत्र में आबद्ध कर दिया गया है और वह सूत्र है इस कृति का पत्रिका का स्वरूप।

विनयपत्रिका के इस विद्वत्तापूर्ण काव्यशास्त्रीय अध्ययन में लेखक ने विशिष्ट अध्ययन, अभिनव दृष्टिकोण और सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का परिचय दिया है। तुलसी-साहित्य के अब तक प्रकाशित श्रेष्ठ अध्ययनों में यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

पाठक-प्रतिक्रिया

'भारतीय वाङ्मय' मासिक पढ़ा। यह संस्कृति, सामाजिक चेतना समृद्ध पत्रिका वस्तुत: पठनीय है। हिन्दी भाषा के अलावा क्षेत्रीय भाषा को जीवित रखकर ही हम अपनी पारम्परिक पहचान को अक्षुण्ण रख सकते हैं। 'भारतीय वाङ्मय' की पहल इस दिशा में प्रशंसनीय है। इसकी उत्कृष्टता की कामना करता हूँ।

—महेशप्रसाद पाठक, झारखण्ड

'भारतीय वाङ्मय' के अंक नियमित मिल रहे हैं। हृदय से आभारी हूँ। यह पत्र सूचनाप्रद तो है ही, अपनी स्वतंत्र टिप्पणियों के लिए भी हमारे आदर का पात्र है। **—अरुण कमल,** पटना

पुस्तक समीक्षा

भारत विजयम्

(संस्कृत महाकाव्य)

आचार्य राधामोहन उपाध्याय

पृ०सं० डिमाई अठपेजी 410 मू० 250.00 रु.

पुस्तक प्राप्ति स्थान
विश्वविद्यालय प्रकाशन
विशालाक्षी भवन, चौक
वाराणसी

विद्वान् लेखक आचार्य राधामोहन उपाध्याय सहृदय कवि हैं। इनकी भाषा सरल और मधुर है। प्रस्तुत महाकाव्य में सरलता और सरसता आदि से अन्त तक है।

यह संस्कृत महाकाव्य 4 खण्डों में विभाजित है। इसमें 40 सर्गों में इतिहास, भक्ति, प्रभक्ति और विजय नामक 4 खण्ड हैं।

इतिहास खण्ड में पोरस-विजय से लेकर बंगलादेश-निर्माण तक का संक्षिप्त वर्णन है। ऐतिहासिक महत्त्व की कतिपय प्रमुख घटनाएँ पद्यरूप में वर्णित हैं। इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं—गुप्तकाल, मुगलसाम्राज्य, शिवाजी, महाराणा प्रताप, स्वतंत्रता-युद्ध, चीन और पाकिस्तान से युद्ध, बंगलादेश का निर्माण।

भक्ति खण्ड में उल्लेखनीय हैं—जैन धर्म, शंकराचार्य, तुलसीदास, स्वामी दयानन्द, योगी अरविन्द, श्रीराम शर्मा आदि।

प्रभक्ति खण्ड में विशेष उल्लेखनीय हैं—गुरु गोविन्द सिंह, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, तिलक, मदनमोहन मालवीय, भगतसिंह, विनोबा, सुभाष बोस आदि।

विजय खण्ड में उल्लेखनीय हैं—अटलबिहारी वाजपेयी, पोखरण-परीक्षण, कारगिल युद्ध, सैनिक गीत आदि।

लेखक ने संक्षेप में भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं, धार्मिक आन्दोलनों तथा राष्ट्रीय जागरण से संबद्ध घटनाओं का सरस मधुर भाषा में सजीव चित्रण किया है। संस्कृतप्रेमी जनता के लिए यह सुन्दर उपहार है। कागज, छपाई, गेटअप आदि सुन्दर है।

—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
आचार्य
ज्ञानपुर (भदोही)

'आलोचना' की आलोचना

'आलोचना' का रामविलास शर्मा विशेषांक प्रकाशित हुआ है। यह रामविलासजी को स्मरण करने से अधिक विस्मरण करता है। इस अंक ने विद्वानों के बीच विवाद उपस्थित कर दिया है।

रामविलास शर्मा की बरसी पर प्रकाशित 'आलोचना' (अप्रैल-जून 2001) पर **कमलेश्वर** की प्रतिक्रिया—

यह विशेषांक अपनी अवधारणाओं, और उद्भावनाओं को प्रायोजित करने के बाद संयोजित किया गया है।

'आलोचना' ने जो विमर्श पेश किया है, वह उनके साहित्य, आलोचना, सौन्दर्य दृष्टि, नवजागरण की अवधारणा, इतिहास के अनुसन्धान, मार्क्सवाद की व्याख्या, उर्दू का विक्षेप, भाषा विज्ञानी इतिहास दृष्टि और वैदिक वाङ्मय का पुनरीक्षण आदि सभी सवालों को खंगालता है। इस दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में कुछ धनुर्धर और कुछ शिखंडी भी शामिल हैं।

'आलोचना' में शिखंडियों ने जो सर-संधान किया है, वह उनके जीवित रहते क्यों नहीं किया जा सका? वे मृत्यु के अन्तिम क्षण तक चेतन थे। यह क्लीव साहस उनके मरणोपरांत क्यों? हमें मूर्ति भंजन की जगह विचार भंजन की तर्कशील सहमति-असहमति वाली स्वस्थ परिपाटी अपनानी पड़ेगी।

साहित्यिक पत्रकारिता के इस मलिनतम उदाहरण की भर्त्सना करना भी जरूरी समझते हैं।

"हम यदि अपने मनीषियों को, उनके गम्भीर वैचारिक मतभेदों के चलते, सतही और क्षुद्र तरीकों से खारिज करते और तोड़ते चले गये तो वैचारिक परम्परा के शून्य को कौन भरेगा? किन उदात्त-मानवीय विचारों के आधार पर इस शून्य को भी भरा जाएगा? यह बुद्धिजीविता नहीं, बौद्धिक तालिबानीकरण है।

क्या कोई भारतीय लेखक अपनी ही गंगा, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी नदियों से इनकार कर सकता है? अपने हिमालय, विन्ध्याचल, अरावली, सतपुड़ा और नीलगिरि के पर्वतों से विरक्त रह सकता है?

यदि हम अपने अतीत को फिर से विकृत और विरूपित हो जाने देंगे, सहमति-असहमति, तर्क-वितर्क (कुतर्क नहीं) के चलते अपने मनीषियों के जीवित 'शव' धर्मांध शक्तियों के सुपुर्द करते जाएँगे तो हम योद्धा नहीं, तार्किक इतिहास के इस युद्ध में आत्महंता तालिबानों की तरह नामांकित किए जाएँगे।

कलकत्ता के मारवाड़ी समाज पर केन्द्रित राजस्थानी लेखिकाओं द्वारा लिखित अत्यन्त रोचक उपन्यास, मारवाड़ी समाज के सामाजिक, औद्योगिक, राजनीतिक विकास की अद्भुत कहानी

पीली आँधी	*प्रभा खेतान*	175
कलि कथा वाया बाईपास	*अलका सरावगी*	150
शेष कादम्बरी	*अलका सरावगी*	150

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

स्मृति-शेष

पारसी थियेटर का आखिरी चिराग नहीं रहा

जिन्दगी का नहीं यकीन जमील,
जिन्दगी को सलाम हो आखिर

पारसी रंगमंच के पितामह आगा हश्र काशमीरी के अनुज रंगमंच अभिनेता मरहूम आगा महमूद काशमीरी के एकमात्र पुत्र शायर व लेखक **आगा जमील कश्मीरी** का रविवार, 15 अक्टूबर 2001 की रात्रि देहावसान हो गया। जमील साहब के साथ ही पारसी रंगमंच की स्मृतियों का पटाक्षेप हो गया। फारसी के इस विद्वान के निधन से एक अपूरणीय क्षति हुई है।

फिदा हुसैन नरसी के निधन के बाद आगा जमील काशमीरी हिन्दुस्तान के एकमात्र पारसी थियेटर के जानकार थे जिन्होंने अपने पिता आगा महमूद काशमीरी और उनके बड़े भाई व पारसी थियेटर के शेक्सपियर कहे जाने वाले आगा हश्र काशमीरी के साथ इस रंगमंच को एक तरह से जीया था। वे खास तौर से आगा हश्र के रंगमंच, उनकी कृतियों और इस रंगमंच की मूल आत्मा के विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने एक सौ से अधिक गजलें लिखी जो प्रकाशित नहीं हो सकीं। उनकी इच्छा इन गजलों को छपवाने की थी पर अभाव के चलते वे इसे प्रकाशित नहीं कर सके। वे कहीं भी जाते थे तो शेरो शायरी का दौर शुरु हो जाता था। वे सुनाते थे—

समझा रहे हो उसको नशबो फ़राज़े गम,
जिसको गमों हयात से पर्दा नहीं रहा।
कैसे कहूँ किसी का शनासा नहीं रहा,
तनहाईयाँ थीं साथ में तनहा नहीं रहा।

शीघ्र प्रकाशित

आबिद सुरती के दो उपन्यास

चरित्रहीन
मुम्बई के कैबरे डांसरों की
रोचक और मर्मस्पर्शी कहानी

⌘

कथावाचक
अयोध्या के मन्दिर मस्जिद विवाद पर आधारित
उपन्यास

⌘

ब्रह्मा विष्णु महेश
त्रिमूर्ति की आध्यात्मिक कथा
रामनगीना सिंह

⌘

कृष्नायन
रामबदन राय
कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का रामचरितमानस की
शैली में सचित्र चित्रण

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आधुनिक तथा प्राचीन एवं मध्यकालीन आधुनिक साहित्य की समग्र तथा प्रमुख रचनाएँ, एकत्र रचनावली तथा ग्रन्थावली के रूप में प्रकाशित हुई हैं। प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय हैं।

प्रमुख रचनावली-ग्रन्थावली-समग्र

भारतेन्दु ग्रन्थावली (1 जिल्द) 100
हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली (11 खण्ड) 4400
निराला रचनावली (8 खण्ड) 2400
प्रसाद वाङ्मय (4 खण्ड) 1000
सुमित्रानन्दन पन्त ग्रन्थावली (7 खण्ड) 2275
रेणु रचनावली (5 खण्ड) 2000
नागार्जुन रचनावली (7 खण्ड) 1400
परसाई रचनावली (6 खण्ड) 1800
मुक्तिबोध रचनावली (6 खण्ड) 1800
श्रीकान्त वर्मा रचनावली (4 खण्ड) 2000
रघुवीरसहाय रचनावली 4200
दस्तावेज : मंटो (5 खण्ड) 1500
बेनीपुरी ग्रन्थावली (8 खण्ड) 4000
महादेवी साहित्य समग्र (3 खण्ड) 2000
धर्मवीर भारती ग्रन्थावली (9 खण्ड) 4000
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' काव्य रचनावली (4 खण्ड) 1500
माखनलाल चतुर्वेदी ग्रन्थावली (10 खण्ड) 4000
शिवमंगल सिंह 'सुमन' समग्र (5 खण्ड) 1750
मलयज की डायरी (3 खण्ड) 1500
राजेन्द्र माथुर संचयन (2 खण्ड) 400
महावीरप्रसाद द्विवेदी रचनावली (15 खण्ड) 4500
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचनावली (2 खण्ड) 500
सियारामशरण गुप्त रचनावली (5 खण्ड) 1000
रामकुमार वर्मा एकांकी रचनावली (4 खण्ड) 1000
रामकुमार वर्मा नाटक रचनावली (3 खण्ड) 600
लक्ष्मीनारायणलाल एकांकी रचनावली (2 खण्ड) 500
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : सम्पूर्ण गद्य रचनाएँ (4 खण्ड) 500
रामकुमार भ्रमर रचनावली (3 खण्ड) 750
प्रतापनारायण मिश्र रचनावली (4 खण्ड) 1050
अमृतलाल नागर रचनावली (12 खण्ड) 2400
रांगेय राघव ग्रन्थावली 7500
देवकीनंदन खत्री समग्र (1 जिल्द) 100
वृन्दावनलाल वर्मा समग्र (7 खण्ड) 610
नरेश मेहता (सम्पूर्ण काव्य, 2 खण्ड) 600
प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियाँ (2 खण्ड) 400

प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य

द्विजेन्द्र ग्रन्थावली *विद्यानिवास मिश्र* 200
कबीर वाङ्मय : रमैनी, साखी, सबद (3 खण्ड) *डॉ० जयदेव सिंह व डॉ० वासुदेव सिंह* 340
कबीर समग्र (2 खण्ड) *डॉ० युगेश्वर* 235
जसवन्त सिंह ग्रन्थावली *सं० पं० विश्वनाथ मिश्र* 150
जायसी ग्रन्थावली *सं० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल* 125
सूरसागर (भाग 1-2) *आचार्य नंददुलारे वाजपेयी* 400
तुलसी ग्रन्थावली (रामचरितमानस) भाग-1 *रामचन्द्र शुक्ल* 60
तुलसी ग्रन्थावली (मानसेत्तर एकादशा ग्रन्थ) भाग-2 *रामचन्द्र शुक्ल* 75
तुलसी ग्रन्थावली (भाग-3) *लाला भगवानदीन* 150
तुलसी ग्रन्थावली (भाग-4) *लाला भगवानदीन* 150
दादूदयाल ग्रन्थावली *परशुराम चतुर्वेदी* 200
नन्ददास ग्रन्थावली *सं० बाबू ब्रजरत्नदास* 200
नरोत्तमदास ग्रन्थावली *पं० विश्वनाथ मिश्र* 50
नागरीदास ग्रन्थावली (दो भागों में) *सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 200
पृथ्वीराज रासो (दो भागों में) *श्यामसुन्दरदास* 700
बोधा ग्रन्थावली *सं० पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र* 150
भूषण ग्रन्थावली *श्यामबिहारी मिश्र व शुकदेवबिहारी मिश्र* 75
कृपाराम ग्रन्थावली *सुधाकर पाण्डेय* 100
सोमनाथ ग्रन्थावली (3 खण्ड) *सुधाकर पाण्डेय* 550
रसलीन ग्रन्थावली *सं० पं० सुधाकर पाण्डेय* 200
रहीम ग्रन्थावली *सं० विद्यानिवास मिश्र व गोविन्द रजनीश* 125
रसखान रचनावली *विद्यानिवास मिश्र व सत्यदेव मिश्र* 125
भूषण ग्रन्थावली *विश्वनाथप्रसाद मिश्र व विद्यानिवास मिश्र* 175
आलम ग्रन्थावली *सं० विद्यानिवास मिश्र* 175
देव की दीपशिखा *सं० विद्यानिवास मिश्र* 45
मीराँ ग्रन्थावली (2 खण्ड) *कल्याणसिंह शेखावत* 350

इतिहास, राजनीति, संस्कृति सन्दर्भ ग्रन्थ

सावरकर समग्र (5 भाग) 2500
मेरी संसदीय यात्रा (4 खण्ड) *अटलबिहारी वाजपेयी* 2000
नयी चुनौती : नया अवसर *अटलबिहारी वाजपेयी*
क्रान्तिकारी कोश (5 खण्ड) *श्रीकृष्ण सरल* 1500

म.म.पं. गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज) 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग (कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित) 20
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
कविराज प्रतिभा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 64
दीक्षा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
श्री साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 50
क्रम साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं. गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नंदलाल गुप्त* 160
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 20
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shhyama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 100
आत्मबोध *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में) *''* 375
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150

पं. अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र 250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क 200
परलोक विज्ञान 300
कुण्डलिनी शक्ति 250
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250
तीसरा नेत्र (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1) 35

सन् 2001 में प्रकाशित प्रमुख ग्रन्थ

उपन्यास

तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120
पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *बच्चन सिंह* 125
ननकी *बच्चन सिंह* (पत्रकार) 100
लोकऋण *विवेकी राय* 80
बबूल *विवेकी राय* 40
रेत की इक्क मुट्ठी *गुरदयाल सिंह* 85
गुड़िया का घर *जीलानी बानो* 85
अविनश्वर *आशापूर्णा देवी* 80
जमीन अपनी तो थी *जगदीशचन्द्र* 225
अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास *राजकमल चौधरी* 295
मता-ए-दर्द *रज़िया फ़सीह अहमद* (*अनु. सुरजीत*) 225
श्यामास्वप्न *जगन्मोहन सिंह* 95
हमको दियो परदेस *मृणाल पांडे* (*अनु. मधु बी. जोशी*) 150
तबादला *विभूतिनारायण राय* 150
खलीफों की बस्ती *शिवकुमार श्रीवास्तव* 295
कादम्बरी *बाणभट्ट* (*उपन्यासान्तरण : राधावल्लभ त्रिपाठी*) 195
ततः किम *मीराकान्त* 125
बिढ़ार *भालचन्द्र नेमाड़े* (प्रकाशनाधीन)
शक्कर *कु. चिन्नप भारती* (प्रकाशनाधीन)
पवलाई *कु. चिन्नप भारती* (प्रकाशनाधीन)
गोबर गणेश *रमेशचन्द्र शाह* (प्रकाशनाधीन)
जेन आयर *शार्लेक ब्रांटे* (प्रकाशनाधीन)
सरधना की बेगम *रंगनाथ तिवारी* (प्रकाशनाधीन)
पांचजन्य *गजेन्द्रकुमार मिश्र* (प्रकाशनाधीन)
इच्छामृत्यु *शिवशंकर* (प्रकाशनाधीन)
पारसमणि *सौ० शुभांगी भडभडे* 300
गलत ट्रेन में *श्रीमती आशापूर्णा देवी* 100
अग्निपंख *श्रीमती सूर्यबाला* 150
भूख *श्रीमती चित्रा मुद्गल* 125
गूँज *महावीरप्रसाद अकेला* 200
अपराजेय *श्यामसुंदर भट्ट* 250
जो नहीं लौटे *नरोत्तम पाण्डेय* 200
हल्दीघाटी का योद्धा *सुशीलकुमार* 150
प्रतीक्षिता *श्रीमती सुषमा अग्रवाल* 200
द्रोण की आत्मकथा *मनु शर्मा* 300
कर्ण की आत्मकथा *मनु शर्मा* 350
गांधारी की आत्मकथा *मनु शर्मा* 350
कृष्णा *युगेश्वर* 200
डॉलर बहू *श्रीमती सुधा मूर्ति* 200
कसौटी *सन्हैयालाल ओझा* 400
मैं अपराधी हूँ *कृष्णा अग्निहोत्री* 400
संतानें जाग उठीं *वीरेन्द्र पाण्डेय* 300
तूफानी रातें *वीरेन्द्र पाण्डेय* 150
वसन्ती भूमि के हज़ार मील *वीरेन्द्र पाण्डेय* 150
गठन *राजकृष्ण मिश्र* 300
दंगा *राजकृष्ण मिश्र* 300
विघटन *राजकृष्ण मिश्र* 300
मैं और मैं *मृदुला गर्ग* 250
गिरमिटिया गाँधी *गिरिराज किशोर* 300
उजाले की तलाश *शरद पगारे* 240
बैगम जैनाबादी *शरद पगारे* 250
क्याप *मनोहरश्याम जोशी* 150
चतुरंग *शैलेन्द्र सागर* 395
शरम *सलमान रूश्दी* 250
अशुभ वेला *समरेश मजूमदार* 395
खिड़की से झाँकता है कौन ? *राजकुमार सैनी* 150
आवां (पुरस्कृत) *चित्रा मुद्गल* 500
सेनापति पुष्यमित्र-1 अभिषेक *सुशीलकुमार* 350
सेनापति पुष्यमि-2 अश्वमेध *सुशीलकुमार* 350
नानी *द्रोणवीर कोहली* 300
स्वराज्य *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 390
वर्जित फल *भीमसेन त्यागी* 100
बाँध-वध *राजेश जैन* 160
लाजो *शान्ताकुमार* 90
मन के मीत *शान्ताकुमार* 80
भारतायण (महाभारत के पात्रों पर आधारित उपन्यास) *शांतिलाल भण्डारी* 175
कनक छड़ी *संतोष शैलजा* 100
दूसरा कृष्ण *डॉ० युगेश्वर* 125
एक सा संगीत *विक्रम सेठ* 295
(*An Equal Music* का हिन्दी अनुवाद) अनु. मोजेज माइकल
कथा सतीसर *चन्द्रकान्ता* 350
शेष कादम्बरी *अलका सरावगी* 150
शादी से पेशतर *शर्मिला बोहरा* 125
तिरोहित *गीतांजलि श्री* 150
अमृत संचय *महाश्वेता देवी, अनु. सुशील गुप्ता* 225
जली थी अग्निशिखा *महाश्वेता देवी* *अनुवादक : रामशंकर द्विवेदी* 125
चार कन्या *तसलीमा नसरनी, अनु. मुनमुन सरकार* 195
टूटे घोंसले के पंख *रामकुमार मुखोपाध्याय* *अनु. मुनमुन सरकार* 125
एक नौकरानी की डायरी *कृष्ण बलदेव वैद्य* 225
निवेदिता *दशरथ ओझा* 200
पर्वत से सागर तक *शैलेश मटियानी* 125
कितने पाकिस्तान *कमलेश्वर* 250
औरतें *खुशवन्त सिंह* 250

संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा डायरी, यात्रा

अक्षरों की रासलीला *अमृता प्रीतम* 125
पत्राचार (पत्र-संकलन) *सम्पा. बिन्दु अग्रवाल* 125
हमको लिख्यौ है कहा *सम्पा. कमलेश अवस्थी* 380
याद आते हैं (संस्मरण) *रमानाथ अवस्थी* 80
एक बूँद सहसा उछली (यात्रा-वृत्तान्त) *अज्ञेय* 140
दीपक जले शंख बजे (संस्मरण) *कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'* 40
आत्मकथा (4 भाग) *हरिवंशराय बच्चन* 725
क्या खोया : क्या पाया (जीवनी और कविताएँ) *अटलबिहारी वाजपेयी* 125
आवारा मसीहा (पुरस्कृत) *विष्णु प्रभाकर* 175
टुकड़े-टुकड़े दास्तान *अमृतलाल नागर* 175
हिमाल यात्रा *कृष्णनाथ* 100
कुमाऊँ यात्रा *कृष्णनाथ* 100
किन्नौर यात्रा *कृष्णनाथ* 125
आस्था पुरुष *प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद* 150
कृतं भवति सर्वत्र *उमाशंकर* 100
घर की बात *रामविलास शर्मा* 75
कही न जाय का कहिए *भगवतीचरण वर्मा* 125
धुंध से उठती धुन *निर्मल वर्मा* 250
कथा-शेष *ज्ञानचन्द जैन* 295
स्मृतिशेष *शिवपूजन सहाय* 100
याद हो कि न याद हो *काशीनाथ सिंह* 175
पर्वत से सागर तक *शैलेश मटियानी* 125
अपनी धरती अपने लोग (3 खण्ड) *रामविलास शर्मा* 500
मेरा संघर्ष (हिटलर की आत्मकथा) *सं. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री* 250
रसीदी टिकट *अमृता प्रीतम* 90
मैं जसदेव सिंह बोल रहा हूँ *जसदेव सिंह* 250
विष्णु प्रभाकर : सम्पूर्ण यात्रावृत्त (2 खण्ड) *विष्णु प्रभाकर* 800
विष्णु प्रभाकर : सम्पूर्ण संस्मरण (2 खण्ड) *विष्णु प्रभाकर* 400
कैलास मानसरोवर *तरुण विजय* 35
सिंधु दर्शन *तरुण विजय* 35
यात्रा-चक्र *धर्मवीर भारती* 295
मलयज की डायरी (3 खण्ड) *सं. नामवर सिंह* 1500
बिरसा मुण्डा और उनका आन्दोलन *कुमार सुरेश सिंह* 300
जब मैं राष्ट्रपति था *आर० वेंकटरामन* 300
अग्नि की उड़ान *ए०पी०जे० अब्दुल कलाम* 200
भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150
सरदार माने सरदार *डॉ० गुणवन्त शाह* 20
आचार्य नरेन्द्रदेव : युग और नेतृत्व *मुकुटबिहारी लाल* 50
अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150
भारत-भूषण महामना पं० मदनमोहन मालवीय *डॉ० उमेशदत्त तिवारी* 100
जो छोड़ गये : वे भी रहेंगे *शंकरदयाल सिंह* 40
मेरा बचपन : मेरा गाँव, मेरा संघर्ष : मेरा कलकत्ता *रामेश्वर टाँटिया* 50
वे दिन वे लोग *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
बढ़ते कदम-बदलते आयाम *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 250
चित्र और चरित्र *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन	125
वेदों में आयुर्वेद	200
वेदों में विज्ञान	300
वेदों में राजनीतिशास्त्र	150
वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र	200
वेदों में नारी	35
वैदिक मनोविज्ञान	184
चतुर्वेद-सुभाषितावली	
ऋग्वेद सुभाषितावली	120
यजुर्वेद सुभाषितावली	35
सामवेद सुभाषितावली	35
अथर्ववेद सुभाषितावली	75
The Essence of Vedas	200
A Cultural Study of The Atharvaveda	300
आत्मविज्ञानम् (The Science of Soul)	75
भक्ति-कुसुमांजलिः	50
शर्मण्याः प्राच्यविदः (German Indologists)	40
वैदिक कोश	500
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी	12
रचनानुवाद कौमुदी	45
प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी	80
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	400
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	250
संस्कृत-निबन्ध-शतकम्	80
संस्कृत व्याकरण एवं लघु-सिद्धान्त-कौमुदी	200
भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र	200
रचनानुवाद-कौमुदी	45

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

उत्तिष्ठ कौन्तेय	*डॉ० डेविड फ्राली अनु. केशवप्रसाद कार्याँ*	150
सब कुछ और कुछ नहीं	*मेहेर बाबा*	60
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200
गुप्त भारत की खोज	*पॉल ब्रंटन*	120
जपसूत्रम (प्रथम खण्ड)	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	150
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड)	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	150
सोमतत्त्व	*सं० प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	100
वेद व विज्ञान	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	180
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन (अद्भुत लीला प्रसंग)	*शारदाप्रसाद सिंह*	40
रावण की सत्यकथा	*रामनगीना सिंह*	60
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता)	*हरीन्द्र दवे*	50
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता)	*डॉ० गुणवंत शाह*	300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*अनु. ना०वि० सप्रे*	180
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी)	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	125
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर)	*सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय*	150
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीरसागर	*कुबेरनाथ राय*	120
जगत तपोवन सो कियो	*डॉ० विवेकी राय*	100
किरात नदी में चन्द्र-मधु	*कुबेरनाथ राय*	60
कहीं दूर जब दिन ढले	*डॉ० गुणवन्त शाह*	40
भोर का आवाहन	*डॉ० विद्यानिवास मिश्र*	20
कुछ महाभारत और	*शशिकान्त*	20

देवयानी

डॉ० एन० चन्द्रशेखरन् नायर

20.00

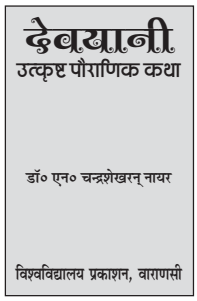

'देवयानी' पौराणिक नाटक है। इसमें 'पुरु' ययाति और 'कचकुमार' के आख्यान द्वारा नारी-जीवन की आधुनिक समस्या, छात्र-जीवन में त्याग तथा तपस्या का महत्त्व, प्रेम की पावनता का उद्घाटन, संसार की सार्थकता का प्रतिपादन, भोग वृत्ति का तिरस्कार, संयम की विशेषता का विश्लेषण और भारत की महिमा का ज्ञापन है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **नवम्बर 2001** **अंक : 11**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in